आइए, देखें क्या हमारी बुनियाद हिल रही है ?

हमारी बुनियाद

-प्रो. वीरसागर जैन

आज मैं आपको कुछ ऐसी बुनियादी बातें बता रहा हूँ जिनका सही-सही ज्ञान जैन धर्म के प्रत्येक अनुयायी को अनिवार्य रूप से होना चाहिए | प्राय: देखा जाता है कि लोग बड़ी-बड़ी जैन संस्थाओं या मन्दिरों के अध्यक्ष, मंत्री या अन्य पदाधिकारी तक बन जाते हैं, पर उन्हें भी ये साधारण-सी बुनियादी बातें पता नहीं होती हैं | ऐसी स्थिति में समाज की उन्नति की कल्पना करना बहुत कठिन है | उदाहरणार्थ अनेक बार ऐसा देखा गया है कि हमारे लोग ही यह कह देते हैं कि जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर हैं | अब आप ही बताइए ऐसी स्थिति में हम दूसरों से क्या बात करेंगे, जबकि हमारे अपने ही लोग गलत उत्तर दे रहे हैं | अत: आज मैं आपको कुछ ऐसी बुनियादी बातें बता रहा हूँ, जो जैन धर्म के प्रत्येक अनुयायी को अनिवार्य रूप से पता होना चाहिए | मैं इस विषय पर स्थान-स्थान पर समाज के लोगों के लिए एक सामान्य कार्यक्रम, ओरियेंटेशन प्रोग्राम जैसा रखना चाहता हूँ और प्रश्नोत्तर आदि की सरल शैली में सबको ये बातें सिखाना चाहता हूँ |

बहरहाल, वे बुनियादी बातें कुछ इस प्रकार हैं-

1. जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर नहीं हैं, क्योंकि वे तो 24वें तीर्थंकर हैं, उनसे पहले ऋषभदेव आदि 23 तीर्थंकर और भी हो चुके हैं, इसलिए जैन धर्म के प्रवर्तक की बात हो तो इस युग में जैन धर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को ही कहना चाहिए |
2. हमारे देश का नाम 'भारतवर्ष' प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम पर रखा गया है, अन्य किसी भरत के नाम पर नहीं | यह बात वैदिक पुराणों में भी बारम्बार स्पष्ट रूप से लिखी हुई है |
3. हमारे देश की प्राचीन लिपि ब्राह्मी है, जिसे सर्वप्रथम ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को सिखाया था | ब्राह्मी लिपि का नाम ब्राह्मी उनकी उसी पुत्री के नाम पर ही पड़ा है | ब्राह्मी लिपि से ही बाद में दुनिया की अनेकानेक लिपियों का विकास हुआ |
4. णमोकार मन्त्र जैन धर्म का मूल मन्त्र है, जो इस प्रकार है-

   णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं |
   णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ||

   जैन धर्म के प्रत्येक अनुयायी को यह णमोकार मन्त्र कंठस्थ होना चाहिए, इसे शुद्ध रूप से पढ़ना आना चाहिए और इसका हिन्दी अर्थ भी अवश्य आना चाहिए |
5. णमोकार मन्त्र प्राकृत भाषा में लिखा हुआ है, संस्कृत या हिन्दी में नहीं | प्राकृत भाषा जैनों की महत्त्वपूर्ण भाषा है | प्राय: सभी प्राचीन जैन ग्रन्थ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं | जैन ग्रन्थों को आगम, श्रुत या जिनवाणी भी कहते हैं |
6. णमोकार मन्त्र को 'णमोकार' इसलिए कहते हैं क्योंकि इसमें पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है | पंच परमेष्ठी के नाम इस प्रकार हैं- अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु |

7. जैन ध्वज में पांच रंग पाए जाते हैं- लाल, पीला, सफेद, हरा और काला | ये पांच रंग पंच परमेष्ठी के प्रतीक हैं | लाल- सिद्ध, पीला- अरिहंत, सफेद- आचार्य, हरा- उपाध्याय, काला- साधु |
8. जैनों के पांच प्रमुख तीर्थ हैं- सम्मेदशिखर, कैलाश पर्वत, चम्पापुरी, गिरिनार और पावापुरी | इनको निर्वाणक्षेत्र या सिद्धक्षेत्र भी कहते हैं, क्योंकि यहाँ से 24 तीर्थंकरों ने निर्वाण अर्थात् मोक्ष प्राप्त किया था | इनके अतिरिक्त भी अनेक तीर्थक्षेत्र हैं |
9. अयोध्या भी जैनों का एक बहुत प्रमुख तीर्थक्षेत्र है, क्योंकि यहाँ ऋषभदेव आदि अनेक तीर्थंकरों का जन्म हुआ है |
10. वाराणसी अर्थात् बनारस भी जैनों का एक बहुत प्रमुख तीर्थक्षेत्र है, क्योंकि यहाँ सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ आदि तीर्थंकरों का जन्म हुआ है |
11. वैशाली भी जैनों का एक बहुत प्रमुख तीर्थक्षेत्र है, क्योंकि यहाँ अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म हुआ है | वैशाली का महत्त्व यहाँ की प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली के कारण भी माना जाता है
12. जैन धर्म के अनुसार भगवान जगत के कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं होते, मात्र ज्ञाता-दृष्टा होते हैं | जगत तो अपनी वैज्ञानिक कार्य-कारण-व्यवस्था से स्वयं संचालित हो रहा है |
13. जैन धर्म के अनुसार भगवान पूर्ण वीतराग भी होते हैं | वे कभी किसी से राग या द्वेष नहीं करते हैं |
14. जैन धर्म के अनुसार भगवान का अवतार नहीं होता है, अपितु उत्तार होता है | इसका मतलब यह है कि कोई भी मुक्त आत्मा अर्थात् परमात्मा इस संसार में पुनः जन्म धारण नहीं करते हैं, अपितु यहीं से कोई पुरुषार्थी आत्मा अपने राग-द्वेष को मिटाकर पूर्ण वीतराग होकर भगवान बन जाता है |
15. जैन धर्म के अनुसार इस विश्व में केवल एक आत्मा नहीं है, अनन्त आत्माएं हैं | प्रत्येक आत्मा में भगवान बनने की शक्ति है |
16. जैन धर्म के चार प्रमुख सिद्धान्त हैं- आचार में अहिंसा, विचार में अनेकांत, वाणी में स्याद्वाद और जीवन में अपरिग्रह |
17. जैन धर्म का सर्वमान्य ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र है | इसे आचार्य उमास्वामी ने लिखा है और इसमें दस अध्यायों में सात तत्त्वों का वर्णन किया गया है | सात तत्त्वों के नाम निम्नलिखित हैं- जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष |
18. जैन धर्म का परम आध्यात्मिक ग्रन्थ समयसार है | इसे आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने लिखा है और इसमें दस अध्यायों में शुद्ध आत्मा का वर्णन किया गया है |
19. जैनों के दो सम्प्रदाय हैं- दिगम्बर और श्वेताम्बर, किन्तु दोनों की मूलभूत मान्यताओं में कोई विशेष अंतर नहीं है, इसलिए दोनों सगे भाइयों की तरह प्रेम-वात्सल्य से रहते हैं | दोनों में अंतर कुछ इस तरह के हैं कि दिगम्बरों के साधु पूर्णतया नग्न दिगम्बर रहते हैं और श्वेताम्बरों के साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं |
20. जैन धर्म में भगवान की पूजा करते समय अन्य कोई ऐसी-वैसी वस्तु नहीं चढाई जाती, अपितु चावल चढाये जाते हैं, जिनको अक्षत कहते हैं और वे इसलिए चढ़ाये जाते हैं, क्योंकि वे पुनः नहीं उगते, हम भी पुनः संसार में जन्म नहीं लेना चाहते हैं |

21. जैन धर्म में रात्रिभोजन नहीं किया जाता, क्योंकि इसमें संयम-तप की प्रधानता है | स्वास्थ्य आदि अनेक दृष्टियों से भी रात्रिभोजन का त्याग वैज्ञानिक सिद्ध होता है |
22. जैन धर्म के अनुसार दीपावली अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण अर्थात् मोक्ष होने के उपलक्ष्य में मनाई जाती है |
23. जैन धर्म में निम्नलिखित पांच पापों के त्याग का उपदेश दिया गया है- हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह | इनसे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, विश्व सभी का कल्याण होता है |
24. जैन धर्म में निम्नलिखित चार कषायों के त्याग का भी विशेष उपदेश दिया गया है- क्रोध, मान, माया और लोभ | इनके त्याग से भी सभी का सर्व प्रकार से कल्याण होता है | आजकल जो अनेक मानसिक रोग उत्पन्न हो रहे हैं, उन्हें भी रोका जा सकता है |